रविवार, दिनाँक **21-04-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरे सामने दर्शन है , मेरा साजन दर्शन है.

यह तो कभी भी छिपता नहीं है।

यह तो कभी भी मिटता नहीं है ।।

हर दम दिखता रहता है ।

मेरे सामने दर्शन है , मेरा साजन दर्शन है।।

यह तो कहीं से आता नहीं है।

यह तो कहीं भी जाता नहीं है ।।

हर अन्दर सजता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

इस की तो है शान निराली।

चारों ओर है जिसकी लाली ।।

कैसा सुन्दर लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

जनचर बनचर है इसके सवाली।

सजनों यह है सतवस्तु का वाली ।।

चतुर्भुजधारी लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

अजर अमर है अडौल निश्चल ।

सबका है यह मालक पालक ।।

बेअन्त बेअन्त कहलाता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह दर्शन तस्वीर नहीं है ।

यह दर्शन तो शरीर नहीं है।।

यह दर्शन है अपना आप।

ज्योति स्वरूप है ब्रह्म प्रकाश ।।

इसका ही सजनों करना जाप ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यही कुदरत का सत्य है कि परमात्मा - आत्मा में स्थित है और उसका अन्तर्दृष्टि द्वारा साक्षात्कार करने हेतु मानव को अपना ख़्याल शब्द गुरु आद् अक्षर ओ३म् संग जोड़ना होता है। यही आत्म-साक्षात्कार करने की एकमात्र युक्ति है। इस संदर्भ में सजनों यदि सच्चे दिल से अफुर होकर प्रयास करो तो इस कार्य की सिद्धि सहजता से हो जाती है यानि आत्म-स्थित परमात्मा दृष्टिगोचर हो जाते हैं। आत्म-स्थित परमात्मा दृष्टिगोचर हो गए तो फिर हृदय में सत्य प्रकाशित हो जाता है यानि आत्मिकज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। इस तरह सुरत के शब्द संग जुड़ने पर हृदय में स्वयंमेव ही चार वेद व रोम-रोम, रग-रग में यानि रोमावली में छः शास्त्र प्रकाशित हो जाते हैं। तदुपरान्त चित्त की एकाग्रता साधनी होती है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि ऐसा करने में जो सक्षम/सफल हो जाता है वह आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है। ऐसा हो जाने पर फिर वह जगत में आत्मज्ञानी होकर विचरता है और ब्रह्म नाम कहाता है। सजनों यह कोई लम्बी बात नहीं है अपितु सूक्ष्म युक्ति है। अतः इस युक्ति को प्रवान करो और आत्म-नियन्त्रण रखते हुए अपनी जीवन-यात्रा सफल कर, अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त हो जाओ।

सजनों इस बार चैत्र के यज्ञ का भी यही उद्देश्य रहा इसलिए यज्ञ पर जो भी बात हुई वह सारी शास्त्र अनुसार ही हुई व उस बातचीत का हर शब्द धारण करने योग्य रहा। इस परिप्रेक्ष्य में हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एकाग्रचित्तता द्वारा जिस सजन ने भी उस बातचीत को सुन-समझ कर धारण करने का पुरुषार्थ दिखाया, वह सजन अवश्य ही अगले वर्ष अपना परमार्थ सिद्ध करके यज्ञ पर आयेगा। यज्ञ की सम्पन्नता पर सजनों आपको कामयाब होने की युक्ति भी बता दी गई कि एक साल में कैसे आपने कदम-कदम पर विचार के साथ नियमबद्ध निरन्तर आगे बढ़ना है और खुद पर पहरा रखना है। अतैव सजनों अब जो भी हमें काम यानि होम-वर्क मिला है हमें उसको समयबद्ध सिद्ध कर, फ़र्स्ट का नतीजा प्राप्त करने के योग्य बनना है और अगले साल शान से यज्ञ पर आना है। सब सजन यह कर लेना। अब ध्यान से भजन सुनोः-

दासी दे हृदय पोंदी ए ठंड, महाबीर जी दे चरणां नू देख के।

चरणां नू देख के प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

दासी दे हृदय पोंदी ए ठंड, महाबीर जी दे चरणां नू देख के।।

महाबीर जी दे चरण प्यारे, सारी सृष्टि दे हैन सहारे।

दासियां नू तारन वाले, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

जेहड़ियां महाबीर जी दा नाम ध्यावन, महाबीर रघुनाथ जी दे चरण दिखावन।

दासियां दी आस पुजावन, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

ओ हिन मेरे गदाधारी, दासियां ते मेहर कीती हिने भारी।

दासी चरणां तों जावे बलिहारी, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

शास्त्र महाबीर जी दा रस्ता बतावन, महाबीर जी रघुनाथ जी दी चरणी बहलावन।

भवसागर पार लंघावन, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

सांवले चरणां दे विच बहलावन, मस्ताना मस्ती दिखावन।

दासियां दे सारे कष्ट मिट जावन, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।

ऋषि मुनि वी नाम ध्यावन, बली जी दी लीला दा अन्त न पावन।

दासियां नू अचरज खेल दिखावन, प्यारे तेरे चरणां नू देख के।।

दासी चरणां तों जावे बलिहारी, महाबीर जी भक्त हितकारी।

दासियां दी किश्ती पार उतारी, प्यारे प्यारे चरणां नू देख के।।

इस भजन के अंतर्गत सच्चेपातशाह जी सजनों को परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ने के प्रति प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनों को सुनने-समझने व धारण करने के पश्चात हृदय में शान्ति स्थापित हो जाती है। शान्ति स्थापित होने पर उनके वचनों की प्रवानगी सहज हो जाती है। परिणामतः भवसागर से पार उतरना किसी विध् भी कठिन कार्य नहीं रह जाता। इसीलिए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग करना ही सर्वदा सर्वोत्तम मानो और उनके वचनानुसार अपने मन-वचन-कर्म को साधने का परम पुरुषार्थ दिखाओ। फिर परमपिता शहनशाह हनुमान जी का जैसा तेज और बल है, वैसे ही तेजस्वी व ओजस्वी इंसान बन परमात्मा के सच्चे सेवक कहलाओ यानि समर्पित भाव से उनके वचनों पर स्थिरता से बने रहते हुए, विचार के साथ जीवन के निष्काम रास्ते पर धर्म-संगत आगे बढ़ने का पुरुषार्थ दिखाओ। यहाँ आगे बढ़ने से तात्पर्य है कि अपनी जीवन नैया को भवसागर में आगे बढ़ाते जाओ और अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचकर विश्राम को पाओ। यकीन मानो सजनों यह युक्ति कठिन नहीं है और न ही इसको व्यवहार में लाना कठिन है अपितु यह तो अति सहज व सरल है। इसके लिए प्रभु के वचनों के प्रति मन में अटूट श्रद्धा और विश्वास होना अति आवश्यक है। अतः सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को श्रद्धा से स्वीकारो और आत्म-

विश्वास के साथ आगे बढ़ते जाओ। याद रखो कि इस कार्य में अपनी मनमत लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर ऐसा किया यानि मनमत लगाई तो फिर आप अपने स्थान को कदापि नहीं पा सकोगे। परिणामतया जो मानव चोला मिला है वह व्यर्थ चला जाएगा जो अपने साथ ही धोखा करने की बात होगी। ऐसा न हो इस हेतु सजनों खुद को समझाओ ताकि बात समझ में आए। अपने साथ-साथ आध्यात्मिक चर्चा द्वारा अपने परिवारजनों को भी समझाना आरम्भ करो। समझें?

हाँ जी।

जानो इस सन्दर्भ में ज्यों-ज्यों सत् शास्त्र के वचनों को आगे बताना आरम्भ करोगे, त्यों-त्यों आपकी अपनी स्मृति में शास्त्रविहित् बात सत्यतापूर्वक ठहरती जायेगी। फिर यही स्मृति में ठहरी हुई बात जब भाव-स्वभाव में उतरेगी तो आपकी बुद्धि निर्मल हो जायेगी। बुद्धि निर्मल हुई तो स्वभावों का तानाबाना भी निर्मल हो जायेगा। इस तरह आप निर्मलता के प्रतीक बन जाओगे। ऐसा होने पर आपका ख्याल, आपकी सुरत गन्दगी में विचरना पसन्द नहीं करेगी। अन्य शब्दों में गन्दगी में उसे घबराहट होगी और अपने से ही बदबू आयेगी। बदबू आने से यहाँ मतलब अंतर्मन में घर कर गई उन कुरीतियों व अविचारों से है जिनके कारण मन में संकल्प-विकल्प उठते हैं और मानसिक दृढ़ता कदापि नहीं पनपती। अतैव सजनों मानो कि जो भी मानसिक रूप से अस्थिर है, उसका ख़्याल/सुरत गन्दगी में विचर रही है यानि नश्वरता का संग कर रही है। मानव होकर सजनों अपने साथ ऐसा गुनाह मत करो अपितु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति प्रवान करो। जान लो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति प्रवान करने पर, आपकी जीवन दिशा बदल जाएगी और जीत-जीत व फतह-फतह प्राप्त होगी। इस फतह को प्राप्त करने हेतु अब ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

अड़ियो हनुमान जी दे चरण मुश्किल ही निगाह आवन।

प्यारे यत्न कर कर हारे, चरण मुश्किल ही ओ दिखावन।।

अड़ियो चरण ओ कैसे, ओ कैसे हिन चरण।

प्यारे यत्न कर कर हारे, चरण मुश्किल निगाह आवन।।

चरण गले दा हार, चरण हथां दा सिंगार।

चरण नैनां दा हिवे नूर, चरण ओ हिवे मशहूर।।

चरण हिवे सिरताज, चरण अटल ओ राज।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

ओ हां ओ हूं हूं ओ हां ओ हूं हूं।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

साजन जी दा रूप इलाही, कैसी आप दी है रुशनाई।

जेहड़ा आप दी शरणी आवे, कोई विरला ओ स्वरूप नू पावे।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

अपार है जे आप दी कृपा, अपार है यह आप दी दृष्टि।

अपार है यह आप दी महिमा, अपार है यह प्रवृति।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

सब कोई है आप दी चरणी, आप हैं रघुनाथ जी दी शरणी।

रघुनाथ जी दे चरणां ते शीश निवावो, कैसी है ओन्हां दी करनी।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

चमकन ओ शेष प्यारे नाले चमके ओ विछाई।

ऊपर चमक रहे साजन नाले चमके लोक लुकाई।

उपकारी पर उपकारी ओ हां ओ हां, प्रवृति पर उपकारी ओ हूं ओ हूं।।

ध्वनिः-

मायापति ओ धनुषधारी ओ हां ओ हां।

नीति पुरुषोत्तम ओहदा है नाम, है ओ जगत बिहारी।।

सजनों इस कीर्तन द्वारा सचचेपातशाह जी कितने सुन्दर ढंग से कलुकालवासियों को स्वार्थपरता का रास्ता छोड़ परोपकार प्रवृत्ति बनने के प्रति युक्ति-संगत प्रेरित कर रहे हैं। मानो यह कुदरत की अपार कृपा है यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मिकज्ञान के रूप में कुदरत की यह कृपा हम पर निरन्तर बरस रही है। इतना होने पर भी यह व्यक्तिगत रूप से हम सब पर आप निर्भर करता है कि हम उस ज्ञान को धारण करके अपने भाव-स्वभावों का समुचित ढँग से परिवर्तन करते हैं या नहीं? सजनों जानो, जो भी इन्सान अपना सजन है, अपने परिवार का सजन है व कुल समाज का सजन है वह तो निश्चित रूप से यह कीर्तन सुनने के पश्चात परोपकार प्रवृत्ति बनने हेतु उत्साहित हो जायेगा क्योंकि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही आध्यात्मिक क्रान्ति लाई जा सकती है यानि हम इन्सान अपनी यथार्थ श्रेष्ठता को सहज प्राप्त कर सकते हैं। अतः इस महत्ता के दृष्टिगत शास्त्रविहित् सहज युक्ति को धारण करो। मानो यह हमारा खुद का काम है यानि स्वार्थपरता का विनाशक भाव व तूं-मैं का भाव छोड़, परमार्थी विचारयुक्त ज्ञान के अनुसार जीवन के हर क्षण को आगे बढ़ाने की व अपनी सोई हुई किस्मत को पुनः जाग्रत करने की मंगलकारी बात है। अतः अगर सोये पड़े हो तो जागृति में आ जाओ क्योंकि अब विलम्ब करने का समय नहीं है। इस संदर्भ में इस चैत्र के यज्ञ पर आपको जो नियमावली आखिरी दिन बताई गई, उस पर खरे उतर, अपनी मनुराज में गिरी हुई सुरत को अन्धकूप से निकाल लो और आकाशों-आकाश अपने यथार्थ घर में स्थित कर लो। इस सन्दर्भ में सजनों यकीन मानो कि अगर आप ऐसा कर लेते हो तो फिर आपकी दृष्टि स्वतः ही पलटा खा जायेगी यानि संसार से हटकर आत्मस्वरुप में स्थित हो जायेगी। ऐसा इसलिए क्योंकि शास्त्र कह रहा है कि जिधर ख़्याल उधर दृष्टि। ऐसा होने पर सुरत को अपने यथार्थ का साक्षात्कार हो जायेगा और वह अमरता के भाव में आकर, मौत के भय से भी आज़ाद हो जायेगी। इस तरह मन से दुष्टता का भाव समाप्त हो जाएगा और सजनता का भाव जाग्रत हो जायेगा यानि आप प्रकाशित बुद्धि हो जाओगे। इस संदर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपने हित की खातिर मानसिक बदलाव के प्रति लापरवाही करना छोड़ दो यानि अपनी

परवाह करो और समझो कि मैं वास्तविक रूप से इन्सान हूँ, हैवान नहीं। मेरे पास सत्य को पहचानने की विवेकशक्ति है और इस शक्ति के बलबूते पर मैं सत्य-असत्य की परख कर यथार्थ को धारने में पूरी तरह से सक्षम हूँ। इस तरह सजनों अपनी सक्षमता का एहसास करो ताकि अपनी किस्मत का ताला खोल अपने वास्तविक इलाही स्वरूप को पहचान सको। जैसा कि शास्त्र बार-बार कह भी रहा हैः-

सोया है तो जाग ओ बन्दे सोया सोया जाग।

खुल गये तेरे भाग ओ बन्दे खुल गए तेरे भाग।।

शहनशाह ओ दाता उस दाते दे चरणों में आ।

जेहड़ा सजन आ गया, उन्हां नूं मिला देवनगे सुहाग।

ओ सुहाग ओ सुहाग ओ सुहाग ओ सुहाग।।

इस सन्दर्भ में क्या हम माने कि अब आप मानसिक रूप से इस शुभ परिवर्तन के लिये तैयार हो?

'हाँ जी'।

इस संदर्भ में सजनों हम आपसे पूछते है कि क्या आपको अच्छा नहीं लगता कि आपकी सुरत सदा पति परमेश्वर के संग बनी रहे?

अच्छा लगता है।

तो मानो सुरत का शब्द से मेल एकता और एक-अवस्था में आने जैसी शुभ बात है क्योंकि फिर सत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता और इन्सान सतवादी बनकर निर्लिप्तता से जगत में विचरता हुआ निर्विकारी कहलाता है। यह होता है अपने आत्म स्वरूप में हर क्षण स्थिरता से बने रहना। अतः सजनों मानो कि दुनियाँ का यह सारा आडम्बर व हर रूप बनावटी है। इनमें उलझना अपनी शोभा पर दाग़ लगाने जैसी बुरी व निन्दनीय बात है। अतः अब तक दाग़दार हो चुके इस चोले को विधिवत् नाम-अक्षर चलाकर धो डालो यानि साफ कर दो क्योंकि ग्रन्थ कह रहा हैः-

नाम दियां बून्दा बरसन, किणमिण किणमिण बरसन

हुन खाक होवे साडी साफ, हुन बीज बोवो दिन रात सुखकारी लिया है संवार

याद रखो जब हृदय साफ हो गया तो फिर ईश्वर के प्रति समर्पित होकर उसकी जीवनदायक व आनन्द प्रदायक आज्ञाओं का पालन करना सुनिश्चित करना होगा। ऐसा करने से परम पिता प्रसन्न हो जाएंगे। जब पिता प्रसन्न होगे तो अन्तर्घट में परम आनन्द, छा जाएगा।

ऐसा महान कारज सिद्ध करने हेतु सजनों अपने भीतर आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़ दो। इस संदर्भ में आपको शास्त्र अनुसार यज्ञ पर बताया ही दिया गया है कि कौन से दुर्गुण छोड़ने योग्य हैं और कौन से सद्गुण धारण करने योग्य हैं। सजनों यकीन मानो कि यदि आप बताई युक्ति अनुसार चल पड़े तो आप मानवता के प्रतीक बन जाओगे। अतः सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के ऊपर विश्वास रखो और विश्वस्त होकर उनकी हर आज्ञा का पालन करते हुए सुधर जाओ, सँवर जाओ और पुनः अपने यथार्थ स्वरूप को पा जाओ। इससे अधिक हम कुछ नहीं कह सकते क्योंकि जो ऐसा नहीं करेगा उसको छोड़ दिया जाएगा। इस संदर्भ में सजनों यदि एक दफा आपका ख्याल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की ओर से विलग हो गया तो हम सच कह रहे हैं आप दुर्गति को प्राप्त हो जाओगे। ऐसा न हो इस हेतु अपने ख़्याल को बनावटी इन्सानों व बनावटी दुनियाँ के साथ मत जुड़ने दो। इस विषय में शास्त्र कहता है कि सबके प्रति नीति अनुसार फ़र्ज अदा अवश्य हँसकर करो पर उनके साथ सम्बन्ध मत जोड़ो। इस तरह फ़र्ज अदा की तरु से हार मत खाओ।

अभी तो सजनों जो आपकी अवस्था है उसके तहत् तो आप दोनों तरफ से ही हार खा रहे हो क्योंकि फ़र्ज अदा में भी पीछे हो और परमार्थ में भी हारे पड़े हो। यह अनीति है और अनीतिवान होकर विचरना दुर्गति को प्राप्त होने की बात है। अतः सजनों सम्भल जाओ, सम्भल जाओ और अपने परिवारजनों को सम्भाल लो यानि उनके भी सजन बन जाओ ताकि वह भी सच्चरित्रता के प्रतीक बनें और आपके रास्ते की रुकावट न बनें अपितु आपके साथी, सहायक व मददगार बनें। अपनी मंजिल को पाने के प्रति यह करना आवश्यक है। आप सब युक्ति अनुसार इस कार्य को करने में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।